

श्रीमद्भागवतम्

स्कन्ध 4



SGD

श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 5

दक्ष के यज्ञ का विध्वंस

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: मैत्रेय ने कहा; जब शिव ने नारद से सुना कि उनकी पत्नी सती प्रजापति दक्ष द्वारा किये गये अपमान के कारण मर चुकी हैं और ऋभुओं द्वारा उनके सैनिक खदेड़ दिये गये हैं, तो वे अत्यधिक क्रोधित हुए।

श्लोक 2: इस प्रकार अत्यधिक क्रुद्ध होने के कारण शिव ने अपने दाँतों से होठ चबाते हुए तुरन्त अपने सिर की जटाओं से एक लट नोच ली, जो बिजली अथवा अग्नि की भाँति

जलने लगी। वे पागल की भाँति हँसते हुए तुरन्त खड़े हो गये और उस लट को पृथ्वी पर पटक दिया।

श्लोक 3: उससे आकाश के समान ऊँचा तथा तीन सूर्यों के सम्मिलित तेज के समान एक भयानक श्याम वर्ण का असुर उत्पन्न हुआ, जिसके दाँत अत्यन्त भयानक थे और उसके सिर के केश प्रज्ज्वलित अग्नि के समान लग रहे थे। उसके हजारों भुजाएँ थीं, जो अस्त्र-शस्त्रों से लैस थीं और उसने नरमुंडों की माला पहन रखी थी।

श्लोक 4: उस महाकाय असुर ने जब हाथ जोड़ कर पूछा, “हे नाथा मैं क्या करूँ?” भूतनाथ रूप शिव ने प्रत्यक्षतः आदेश दिया, “तुम मेरे शरीर से उत्पन्न होने के कारण मेरे समस्त पार्षदों के प्रमुख हुए, अतः यज्ञ (स्थल) पर जाकर दक्ष को उसके सैनिकों सहित मार डालो।”

श्लोक 5: मैत्रेय ने आगे बताया : हे विदुर, वह श्याम पुरुष भगवान् का साक्षात् क्रोध था और शिवजी के आदेशों का पालन करने के लिए उद्यत था। इस प्रकार किसी भी

विरोधी शक्ति का सामना करने में अपने को समर्थ समझ कर उसने भगवान् शिव की प्रदक्षिणा की।

श्लोक 6: घोर गर्जना करते हुए शिव के अन्य अनेक सैनिक भी उस भयानक असुर के साथ हो लिए। वह एक विशाल त्रिशूल लिए हुए था, जो इतना भयानक था कि मृत्यु का भी वध करने में समर्थ था और उसके पाँवों में कड़े थे, जो गर्जना करते प्रतीत हो रहे थे।

श्लोक 7: उस समय यज्ञस्थल में एकत्रित सभी लोग—पुरोहित,

प्रमुख यजमान, ब्राह्मण तथा उनकी पत्नियाँ—आश्चर्य करने लगे कि यह अंधकार कहाँ से आ रहा है। बाद में उनकी समझ में आया कि यह धूलभरी आँधी थी और वे सभी अत्यन्त व्याकुल हो गये थे।

श्लोक 8: आँधी के स्रोत के सम्बन्ध में अनुमान लगाते हुए उन्होंने कहा : न तो तेज हवाएँ चल रही हैं और न गौएँ ही जा रही हैं, न यह सम्भव है कि यह धूल भरी आँधी लुटेरों द्वारा उठी है, क्योंकि अभी भी बलशाली राजा बहिर् उन्हें दण्ड देने के

लिए जीवित है। तो फिर यह धूलभरी
आँधी कहाँ से आ रही है? क्या इस
लोक का प्रलय होने वाला है?

श्लोक 9: दक्ष की पत्नी प्रसूति
एवं वहाँ पर एकत्र अन्य स्त्रियों ने
अत्यन्त आकुल होकर कहा : यह
संकट दक्ष के कारण सती की मृत्यु से
उत्पन्न है, क्योंकि निर्दोष सती ने
अपनी बहनों के देखते देखते अपना
शरीर त्याग दिया है।

श्लोक 10: प्रलय के समय, शिव
के बाल बिखर जाते हैं और वे अपने
त्रिशूल से विभिन्न दिशाओं के

शासकों (दिकपतियों) को बेध लेते हैं।
वे गर्वपूर्वक अट्टहास करते हुए ताण्डव
नृत्य करते हैं और दिकपतियों की
भुजाओं को पताकाओं के समान
बिखेर देते हैं, जिस प्रकार मेघों की
गर्जना से समस्त लोकों में बादल
छितरा जाते हैं।

श्लोक 11: उस विराट श्याम
पुरुष ने अपने डरावने दाँत निकाल
लिए। अपनी भौंहों के चालन से उसने
आकाश भर में तारों को तितर-बितर
कर दिया और उन्हें अपने प्रबल
भेदक तेज से आच्छादित कर लिया।

दक्ष के कुव्यवहार के कारण दक्ष के पिता ब्रह्मा तक इस घोर कोप-प्रदर्शन से नहीं बच सकते थे।

श्लोक 12: जब सभी लोग परस्पर बातें कर रहे थे तो दक्ष को समस्त दिशाओं से, पृथ्वी से तथा आकाश से, अशुभ संकेत (अपशकुन) दिखाई पडने लगे।

श्लोक 13: हे विदुर, शिव के समस्त अनुचरों ने यज्ञस्थल को घेर लिया। वे नाटे कद के थे और अनेक प्रकार के हथियार लिये हुए थे उनके शरीर मकर के समान कुछ-कुछ काले

तथा पीले थे। वे यज्ञस्थल के चारों ओर दौड़दौड़कर उत्पात मचाने लगे।

श्लोक 14: कुछ सैनिकों ने यज्ञ-पंडाल के आधार-स्तम्भों को नीचे गिरा दिया, कुछ स्त्रियों के कक्ष में घुस गये, कुछ ने यज्ञस्थान को विनष्ट करना प्रारम्भ कर दिया और कुछ रसोई घर तथा आवासीय कक्षों में घुस गये।

श्लोक 15: उन्होंने यज्ञ के सभी पात्र तोड़ दिये और उनमें से कुछ यज्ञ-अग्नि को बुझाने लगे। कुछेक ने तो यज्ञस्थल की सीमांकन मेखलाएँ

तोड़ दी और कुछ ने यज्ञस्थल में पेशाब कर दिया।

श्लोक 16: इनमें से कुछ ने भागते मुनियों का रास्ता रोक लिया, किन्हीं ने वहाँ पर एकत्र स्त्रियों को डराया-धमकाया और कुछ ने पण्डाल से भागते हुए देवताओं को बन्दी बना लिया।

श्लोक 17: शिव के एक अनुचर मणिमान ने भृगु मुनि को बन्दी बना लिया तथा श्याम असुर वीरभद्र ने प्रजापति दक्ष को पकड़ लिया। एक अन्य अनुचर चण्डेश ने पूषा को तथा

नन्दीश्वर ने भग देवता को बन्दी बना लिया।

श्लोक 18: लगातार पत्थरों की वर्षा के कारण समस्त पुरोहित तथा यज्ञ में एकत्र अन्य सदस्य महान् संकट में पड़ गये। अपने प्राणों के भय से वे चारों ओर तितर-बितर हो गये।

श्लोक 19: वीरभद्र ने अपने हाथों से अग्नि में आहुति डालते हुए भृगुमुनि की मूँछ नोच ली।

श्लोक 20: वीरभद्र ने तुरन्त उस भग को पकड़ लिया, जो भृगु द्वारा शिव को शाप देते समय अपनी

भौंहे मटका रहा था। उसने अत्यन्त क्रोध में आकर भग को पृथ्वी पर पटक दिया और बलपूर्वक उसकी आँखें निकाल लीं।

श्लोक 21: जिस प्रकार बलदेव ने अनिरुद्ध के विवाहोत्सव में द्यूतक्रीड़ा के समय कलिंगराज दंतवक्र के दाँत निकाल लिये थे, उसी प्रकार से वीरभद्र ने दक्ष तथा पूषा दोनों के दाँत उखाड़ लिये, क्योंकि दक्षने शिव को शाप दिये जाते समय दाँत दिखाये थे और पूषा ने भी

सहमति स्वरूप हँसते हुए दाँत दिखाए
थे।

श्लोक 22: तब वह दैत्य सदृश
पुरुष वीरभद्र दक्ष की छाती पर चढ़
बैठा और तीक्ष्ण हथियार से उसके
शरीर से सिर काटकर अलग करने
का प्रयत्न करने लगा, किन्तु सफल
नहीं हुआ।

श्लोक 23: उसने मंत्रों तथा
हथियारों के बल पर दक्ष का सिर
काटना चाहा, किन्तु दक्ष के सिर की
चमड़ी तक को काट पाना दूभर हो

रहा था। इस प्रकार वीरभद्र अत्यधिक चकित हुआ।

श्लोक 24: तब वीरभद्र ने यज्ञशाला में लकड़ी की बनी युक्ति (करनी) देखी जिससे पशुओं का वध किया जाता था। उसने दक्ष का सिर काटने में इसका लाभ उठाया।

श्लोक 25: वीरभद्र के कार्य से शिवजी के दिल को प्रसन्नता हुई और वह वाह-वाह कर उठा तथा जितने भी भूत, प्रेत तथा असुर वहाँ आये थे, उन सबों ने भयानक किलकारियाँ भरी। दूसरी ओर, यज्ञ का भार

सँभालने वाले ब्राह्मण दक्ष की मृत्यु के कारण शोक से चीत्कार करने लगे।

श्लोक 26: फिर वीरभद्र ने उस सिर को लेकर अत्यन्त क्रोध से यज्ञ अग्नि की दक्षिण दिशा में आहुति के रूप में डाल दिया। इस प्रकार शिव के अनुचरों ने यज्ञ की सारी व्यवस्था तहस-नहस कर डाली और समस्त यज्ञ क्षेत्र में आग लगाकर अपने स्वामी के धाम, कैलास के लिए प्रस्थान किया।

* * * * *

श्रीलगुरुदेव